संक्षिप्त जीवन परिचय

आपका लौकिक जन्म 15 अक्टूबर, 1950 में कोलकाता के एक धार्मिक सम्पन्न परिवार में हुआ। आपका लौकिक नाम लक्ष्मी है परन्तु बाल्यकाल से सभी प्यार से आपको 'मुन्नी बहन' के नाम से पुकारते हैं। इस प्रकार आपकी यही पहचान बन गई। आप सन् 1969 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आई। आपने परमपिता परमात्मा को पहचान कर उनकी शिक्षाओं- ज्ञान, योग, सेवा और धारणा के महत्व को जाना। तत्पश्चात् आपका तीसरा नेत्र खुला और परमात्मा द्वारा सूक्ष्म व तीक्ष्ण बुद्धि का वरदान प्राप्त हुआ। इस अद्भुत और अलौकिक अनुभव के बाद आपने दृढ़ निश्चय किया कि आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन कर अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवाओं में लगाऊं।

प्रारम्भिक समय में आपको संस्था के साकार संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा और आदि देवी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती की पालना का परम सौभाग्य मिला। सन् 1969 में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी बनीं। उसी वर्ष माउण्ट आबू में कन्याओं के लिए विशेष टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम के प्रथम ग्रुप में आपने विशेष ट्रेनिंग ली। तत्पश्चात् आप मधुबन में ही अपनी सेवायें देने लगीं। सेवायें करते समय दादी प्रकाशमणि जी और दीदी मनमोहिनी जी ने आपको विशेष पालना दीं और अपने पास सेवा में रख लिया।

आपने ईश्वरीय सेवाओं में अथक होकर वफादारी, आज्ञाकारी, ईमानदारी और विशाल बुद्धि का परिचय दिया। फलस्वरूप आपको वरिष्ठ दादियां, दादायें और ईश्वरीय परिवार का स्नेह, सहयोग और दुआयें मिलीं। यज्ञ की सेवाओं में दादियों की सहयोगी बनकर निश्चिंत, निर्भय, निरंहकारी और निर्माण चित्त होने के कारण आपको विशिष्ट जिम्मेदारी मिलीं। दादी प्रकाशमणि जी का वरदहस्त आपके सिर पर सदा रहा है। आपने प्रशासन के कार्यों में सदा कुशलता दिखाई और यज्ञ वत्सों में समभाव, क्षमाभाव, प्रेमभाव एवं सद्भावना के आदर्श बनीं। आपने दादी प्रकाशमणि जी के साथ देश-विदेश में सभी प्रमुख स्थानों का भ्रमण भी किया। आपने दादी जी का पूरा ध्यान देते हुए उनकी सेवा और सम्भाल कीं जिससे अनेक ईश्वरीय सेवाओं का भाग्य प्राप्त हुआ। उनकी विशेषताओं को अपने जीवन में उतारा इसलिए आप सभी ब्रह्मावत्सों के लिए सच्चाई-सफाई का उदाहरणमूर्त हैं।

आपके अंदर यज्ञ के हर कार्य को सुचारू रूप से करने और कराने की अद्भुत कला है। आप एक कुशल प्रशासक एवं व्यवस्थापक हैं। आपमें बड़े से बड़े कार्यक्रम को व्यवस्थित करने की अद्वितीय क्षमता है। आपकी बुद्धि कम्प्यूटर के समान तीव्र है। आप यज्ञ के भवनों की सम्भाल करते हुए सभी समर्पित बहनों एवं भाइयों की हर आवश्यकता का पूरा ध्यान रखती हैं।

आप मैनेजमेंट कमेटी और राजयोगा एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन की सदस्या हैं। प्यारे शिवबाबा की श्रीमत पर सदा चलते हुए आप अपनी विशेषताओं को निखार रही हैं। आप यज्ञ की हर छोटी-बड़ी चीज का ध्यान रखते हुए सबको संतुष्ट कर अपनी अथक सेवायें दे रही हैं। इसी कारण आपको सभी भाई-बहनें 'मुन्नी दीदी' कहकर पुकारते हैं।